चीन देश का हाल

चीन देश का हाल

सम्पादक

ठाकुरदत्त मिश्र

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९४१

मूल्य ।=)

चीन देश का हाल

चीनी व्यापारी

मोहन बाबू--रामू ! तुम समझे वह व्यापारी कौन था ?

रामू--कौन व्यापारी ? वही जिससे आपने अभी कपड़ा मोल लिया ?

मोहन बाबू--हाँ हाँ, वही जो अभी बैठा हुआ था।

रामू--वह कोई ईसाई या अँगरेज़ होगा।

मोहन बाबू--नहीं, वह एक चीनी व्यापारी था।

रामू--लेकिन वह तो हैट लगाये हुए था ?

मोहन बाबू--हैट लगाने से क्या होता है ? तुम्हारे दादाजी और छोटे चाचाजी भी तो हैट लगाते हैं। क्या तुमने उसकी बातचीत नहीं सुनी ? क्या उसका उच्चारण अँगरेज़ों का सा था ?

रामू--मैंने उसकी बातों की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं तो इस पुस्तक को पढ़ रहा था, लेकिन मेरे कानों में कुछ पेंग-पेंग ऐसे शब्दों की आवाज़ जरूर पड़ी थी।

मोहन बाबू—अच्छा ! तो तुम पेकिङ्ग को भी न समझ सके ?

रामू—नहीं चाचाजी, मैं तो बिलकुल ही नहीं समझ सका।

मोहन बाबू--क्या तुमने भूगोल में नहीं पढ़ा है कि पेकिङ्ग चीन की राजधानी है ?

रामू—हाँ हाँ, मुझे अब याद आ गया। उस समय तो मैंने उस व्यापारी को चीननिवासी समझा ही नहीं था, इसी कारण मेरा ध्यान भी उस ओर नहीं गया। अब आपने कहा तो मैं समझ गया। तो क्या वह पेकिङ्ग के सम्बन्ध में कुछ कह रहा था ?

मोहन बाबू—नहीं तो, यों ही बातों ही बातों में उसकी कुछ चर्चा चलने लगी थी।

रामू—मैं तो उसकी बातें ही न समझ सका, नहीं तो मैं उससे चीन और पेकिङ्ग के बारे में पूछता।

मोहन बाबू--तो क्या तुम वहाँ के बारे में जानने के इच्छुक हो ?

रामू—हाँ चाचाजी, यदि आपको मालूम हो तो मुझे वहाँ का कुछ हाल अवश्य सुनाइए।

मोहन बाबू--बहुत अच्छा। आज सन्ध्या को मैं तुम्हें चीन के बारे में बताऊँगा। अब तो तुम्हारे स्कूल का भी समय हो गया है और मुझे भी स्टेशन जाना है। चलो, अब खाना खा लें।

चाचा तथा भतीजे उठकर घर में पहुँचे, खाना खाया और अपने-अपने काम पर चले गये। शाम को जब फिर सब लोग जमा हुए तब रामू ने दिन का वादा याद दिलाया।

मोहन बाबू—हाँ हाँ, मुझे याद है। मैंने इसी उद्देश से आज कुछ पुस्तकें भी पढ़ ली हैं, ताकि तुम्हें वहाँ की अच्छी-अच्छी बातें बताऊँ। अच्छा, तो बताओ कहाँ से आरम्भ किया जाय।

रामू—जहाँ से आप उचित समझें।

मोहन बाबू—दिन में पेकिङ्ग नगर की चर्चा चली थी। पहले मैं तुम्हें वहीं का हाल सुनाता हूँ। पेकिङ्ग के बारे में कोई विशेष मनोरञ्जक बातें नहीं हैं, मगर बाद को दूसरी बातों के समझने में ये सब बातें तुम्हें बड़ी ही सहायक प्रमाणित होंगी।

रामू—अच्छा सुनाइए।

पेकिङ्ग नगर

मोहन बाबू—चीन की पुरानी राजधानी (जैसा कि तुमको मालूम है) पेकिङ्ग है। इस नगर में हज़ारों वर्ष से चीन की राजधानी चली आ रही है। भिन्न-भिन्न राजाओं ने यहाँ राज्य किया, इसलिए पेकिङ्ग नगर के कण-कण में चीन की सभ्यता और संस्कृति की कहानियाँ निहित हैं। पुराने समय की कथाओं से ज्ञात होता है कि ईसा से ११०० वर्ष पहले 'ची' नामक एक नगर था। अतएव १७५१ ई० में चीन लङ्ग नामक एक मांचू वंश के विद्वान् राजा ने उसकी स्मृति में एक लाट बनवाई, और उस पर लिखवाया—"प्राचीन नगर 'ची' का फाटक इस स्थान पर स्थित था"। अन्य-अन्य घटनाओं से ऐसा अनुमान किया जाता है कि चीनियों और तातारियों के शासन-काल में इसके (पेकिङ्ग) नाम बदलते रहे और अन्त में यह प्रान्त की राजधानी हो गया। चीन के प्राचीन इतिहास में कितनी ही किंवदन्तियाँ क्यों न भरी पड़ी हों, परन्तु इससे तो इनकार नहीं किया जा सकता कि जिस समय योरप सभ्यता

की ओर बढ़ रहा था, उस समय चीन की सभ्यता और संस्कृति बहुत ही बढ़ी-चढ़ी थी। 'चाव' वंश, जो ईसा से ११०० वर्ष पहले से २५८ वर्ष पहले तक शासक रहा, चीन का सबसे पुराना शासक-वंश है। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा 'आववाग' नाम का हुआ है। इसी वंश के 'लिंगवाग' राजा के शासन-काल में 'कनफ्यूशस' का जन्म हुआ था। यह काल ईसा के ६०० वर्ष पहले का है। चाव वंश के शासन-काल का अन्तिम काल आक्रमणकारियों तथा उनके अनुगामियों के पारस्परिक युद्धों का काल है। 'चावस्यांग' दूसरे वंश का प्रसिद्ध राजा था और इसी के शासन-काल में चीन का नाम चीन पड़ा था। इसने अपने शत्रुओं को पराजित किया था। ईसा से २५१ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो गई। तब उसका पोता, जिसका चीनी लोग बड़ा सम्मान करते हैं, सिंहासनारूढ़ हुआ और उसने 'ह्वांग' (जिसका अर्थ राजा है) की उपाधि धारण की। इसी के शासनकाल में चीन की प्रसिद्ध दीवाल का निर्माण हुआ था। इस दीवाल के निर्माण का उद्देश्य यह था कि चीन देश तातारियों के आक्रमण से सुरक्षित रहे। यह ईसा से २१४ वर्ष पहले की बात है।

रामू—और चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किस समय हुआ?

मोहन बाबू—चीन में बौद्ध धर्म का चलन ईसा से ६५ वर्ष पहले हुआ था।

रामू—हाँ, तो फिर क्या हुआ?

मोहन बाबू—इसके पश्चात् चीन देश तीन भागों में विभाजित हो गया और काफ़ी अरसे तक इसी दशा में रहा। निर्बल और अस्थिर शासन के कारण इसकी बड़ी बुरी दशा रही।

चीन का धन और उर्वरता देखकर 'खतन' के तातारियों ने आक्रमण कर दिया। इस समय यह नगर 'प्यी चू' के नाम से प्रसिद्ध था। तातारियों ने इसे अपने मन के अनुकूल नहीं पाया, इस कारण ९८६ ई० में इसे समूल नष्ट करके नवीन नगर का शिलारोपण किया और अपने इच्छानुसार बनवाया। बड़े-बड़े राजमार्ग, जो उत्तर से दक्षिण की ओर जाते हैं, बनवाये। प्राचीर तथा खुले हुए मैदानों को ठीक करवाया, ताकि राजकुमार तथा राज्य के उच्च पदाधिकारी अपने घोड़े और ऊँटों के सहित तम्बू लगा सकें।

१२ वीं शताब्दी के आरम्भ में (जो युद्ध का समय था) चीनियों ने दुबारा इस नगर पर अधिकार कर लिया और कुछ समय तक शासन भी किया, परन्तु सन ११५१ ई० में एक दूसरी लड़ाकू जाति ने चीन के तातारियों को पराजित कर दिया। ये लोग उत्तरी चीन पर विजय प्राप्त करते हुए धुर दक्षिण तक बढ़ गये। पेकिङ्ग नगर उस समय 'चङ्गतो' कहलाता था। इस विजयी जाति ने इस नगर को और भी विस्तृत करके इसे राजधानी बनाया। सन् १२१५ ई० में इन तातारियों पर भी आपत्ति आई और मंगोल जाति ने चंगेज़खाँ की अध्यक्षता में इन्हें बुरी तरह पराजित कर दिया। चंगेज़खाँ के पोते ने इस नगर का नवनिर्माण कराना आरम्भ कर दिया और उसने अपनी

इस राजधानी को ऐसे शानदार ढंग से बनाया कि आज भी इमारतों की दृष्टि से वह श्रेष्ठ समझा जाता है। प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने 'खान' की राजसभा तथा नगर की सुन्दरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। चंगेज़ खाँ के पोते के बाद दो और राजाओं ने भी (जिनमें से एक चीनी और दूसरा मांचू जाति का था) इस राजधानी की सुन्दरता में वृद्धि की। इनमें से एक का नाम 'यंगलू' था, जिसने सन् १४०३ ई० से १४२५ ई० तक शासन किया। दूसरा मांचू बादशाह था जिसका नाम चीनलङ्ग था। इसने सन् १७३५ ई० से १७५६ ई० तक राज्य किया।

वर्तमान पेकिङ्ग नगर बिलकुल वही है जिसे 'यंगलू' राजा ने बनवाया था। यहाँ तक कि आज के राजभवन भी उसी के समय के हैं। हाँ, एक बात याद रखने के योग्य है कि 'यंगलू' राजा ने इस नगर का निर्माण उसी ढाँचे पर करवाया था, जो 'खान' राजा ने खड़ा किया था। मांचू वंश के चीनलङ्ग राजा ने इस नगर की सुन्दरता को बिगड़ने नहीं दिया था, यही उसकी विशेषता थी। तातारी, मंगोल तथा मांचू, सब के सब राजाओं ने कुछ न कुछ इस नगर की वृद्धि अवश्य की और अब वे हैं भी नहीं, परन्तु उनके वैभव का पता आज भी नगर घूमने से लग जाता है। चीन के सम्राट् का सिंहासन, जो अब चीन के अधिकार में है, उनके वैभव की स्मृति स्थायी रखने के लिए काफ़ी है।

रामू—चाचा जी! यह तो आपने पेकिङ्ग नगर का इतिहास सुना दिया। अब यह बताइए कि क्या चीनी लोग बञ्जारों की

भाँति अपना सामान लिये हुए इधर-उधर घूमते रहते हैं। क्या वे घर बनाकर नहीं रहते ?

मोहन—वाह ! यह तुमने कैसे समझ लिया कि वे मकान नहीं बनाते ?

रामू—मुझे उस चीनी व्यापारी का ध्यान आ गया था। वह तो कपड़ा लिये हुए इधर-उधर घूमता ही रहता है।

मोहन बाबू—नहीं, ऐसा नहीं है। वह तो व्यापार के लिए हमारे देश में आया है। जैसे तुमने देखा होगा कि अफ़ग़ानी लोग हींग इत्यादि लेकर इधर-उधर बेंचते फिरते हैं, लेकिन उनके अपने देश में अच्छे-अच्छे घर बने हुए हैं।

रामू—क्या इन मकानों में सभी रिश्तेदार एक साथ ही रहते हैं ?

मोहन बाबू—हाँ, चीन के एक मकान में बहुत ही बड़े कुटुम्ब रहते हैं। एक ही घर में चाचा, चाची और चचेरा भाई इत्यादि सभी रहते हैं। कहीं-कहीं तो दूर-दूर के रिश्तेदार भी एक ही साथ एक ही मकान में रहते हैं। इसलिए चीनी घर एक प्रकार की धर्मशाला या बच्चों का क्लब होता है, जिसमें हर घड़ी बच्चों की चीं-पों सुनाई पड़ती है।

साधारण तौर पर चीन के निवासियों का भोजन चावल है। दक्षिणी चीन में जलखवा (नाश्ता) में एक बहुत बड़ा प्याला चावल का होता है। धान के उगने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता पड़ती है, इसी कारण चीनी लोग अधिकतर अपने खेत नदी के किनारे पर ही बनाते हैं। खेत चाहे तीन ही एकड़ का हो, मगर उसकी सीमाएँ

पत्थरों से बाँध दी जाती हैं, बीच में बिलकुल कीचड़ की शक्ल का खेत होता है। खेतों में सिंचाई के लिए गड्ढों आदि से पानी लाते हैं। सिंचाई में चीनी काफ़ी होशियार होते हैं और इसी लिए साल में दो फ़सलें पैदा करते हैं। एक अप्रैल में और दूसरी सितम्बर में। अगर ये लोग दो फ़सलें न पैदा करें तो बहुत से चावल खानेवाले भूखों मर जाएँ। चीनी बच्चों की पोशाक में कोई विशेषता नहीं होती। वे अपनी हैसियत के अनुसार जाड़ों में समूर और गर्मियों में रेशम आदि के कपड़े पहनते हैं। उनकी पोशाकों में आस्तीनों की विशेषता होती है। चीन के लोग किसी चीज़ के लिए यह नहीं कहते कि उसे जेब में रख लो, वरन् कहते हैं कि उसे आस्तीन में रख लो। कपड़े ऋतुओं के अनुसार बदलते रहते हैं। जिस दिन अधिक ठण्डक होती है, उस दिन को वहाँ यह कहा जाता है कि 'यह दिन दस कोट का है'। बरसात के दिनों में कुलियों की पोशाक अत्यन्त विचित्र होती है। उनके उस समय पहनने के वस्त्र फूस के बने होते हैं और उन पर से पानी ठीक उसी प्रकार फिसलता है जिस प्रकार बत्तख की पीठ पर से।

चीन देश की साधारण अवस्था प्रतिदिन बदलती रहती है। प्रतिदिन यह एक नया ही देश ज्ञात होता है। एक प्रसिद्ध अँगरेज़ डाक्टर से, जो चीन में कई वर्ष रह चुका था, जब चीन के सम्बन्ध में पूछा गया तब उसने कहा कि मैं अब ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि इस समय वहाँ की क्या दशा है। क्योंकि मुझे चीन देश छोड़े हुए कई मास व्यतीत हो चुके हैं। इस बात से

तुम अनुमान कर सकते हो कि चीन की दशा कितनी शीघ्रता से बदलती रहती है। नये-नये आविष्कार, जैसे साइकिल-मोटर आदि, उनके रहन-सहन में परिवर्तन करते रहते हैं। चीनी लोग फ़ोटोग्राफी में भी काफ़ी होशियार हो गये हैं। चीनी लोगों को इस बात पर बड़ा ही गर्व है कि 'बारूद' के सबसे पहले आविष्कारक हम लोग ही हैं और यह सत्य भी है। लेकिन शताब्दियों तक पूर्व अपनी पुरानी जगह पर ही बना रहा जब कि पच्छिम-वाले दिन प्रतिदिन उन्नति करते गये। हाँ, अब अवश्य चीनी लोग कुछ सजग हो रहे हैं, लेकिन पच्छिम के अनुकरण में वे इस क़दर रत हैं कि अच्छाई और बुराई दोनों ही को अपनाने में लगे हैं। एक चीनी ने जब पहले-पहल बाइसिकिल देखी तो उसे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ, वरन् उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि हमारी प्राचीन गाड़ी पुनः दिखाई दी है।

चीन की दशा बराबर बदलती जा रही है, यहाँ तक कि अब वहाँ के लोगों की चोटो भी कटती जा रही है। किसी समय यही चोटी धर्म का एक मुख्य अङ्ग समझी जाती थी और मांचू वंश के शासनकाल में तो यह अत्यन्त सम्मानित समझी जाती थी। चीनियों की एक बहुत बड़ी संख्या अब चोटी नहीं रखती है।

चीनी बड़े ही परिश्रमी होते हैं, इसी लिए अवकाश के दिनों में वे त्योहारों का आनन्द भी ख़ूब उठाते हैं। चीनी लोग पतङ्गबाज़ी को बहुत ही पसन्द करते हैं। इनकी पतङ्गों की सूरतें बहुत ही विचित्र प्रकार की होती हैं। कभी-कभी तो पतङ्ग बनानेवाले कमाल कर देते हैं।

वे इतनी बढ़िया-बढ़िया पतंगें बनाते हैं कि उड़ते समय वे बिलकुल चिड़िया ही ज्ञात होती हैं। चीनी लोग भिन्न-भिन्न भाँति की आतिशबाज़ी तथा लालटेनें बनाते हैं। उत्तरी चीन में तो बर्फ़ तक की लालटेनें बनाई जाती हैं। इन लोगों का एक त्योहार 'गुलदाउदी' का होता है, जो नवें महीने की नवमी तिथि को मनाया जाता है। चीनी लोग अपनी भाषा में इसे 'चंग यांग ची' कहते हैं। उस दिन ये लोग किसी पहाड़ी अथवा मीनार पर चढ़ा करते हैं। हाँ, क्या तुम कावटाव के विषय में जानते हो ?

रामू—कावटाव का क्या अर्थ है ?

मोहन बाबू—कावटाव का अर्थ है सम्मान-प्रदर्शन। मान लो, एक न्यायाधीश न्यायालय में बैठा है। उसके सामने पहुँचनें पर गवाह, पुलिस तथा अभियुक्त सब लोगों के लिए कावटाव होना परम आवश्यक है। वे लोग तीन बार सारे शरीर को झुकायेंगे और तीन बार झुक-झुककर पृथ्वी को छुएँगे। यह उनके लिए बड़ा ही सम्मान-सूचक चिह्न है।

चीनियों का असली भोजन चावल ही है, लेकिन वहाँ ज्वार, गेहूँ आदि की भी खेती होती है। इसके अतिरिक्त बड़ी-बड़ी नदियों में मछली का शिकार भी ख़ूब होता है। मछली का शिकार करने के लिए ये लोग तरह-तरह के उपायों का प्रयोग करते हैं। उनमें से एक उपाय तुम्हें बताता हूँ।
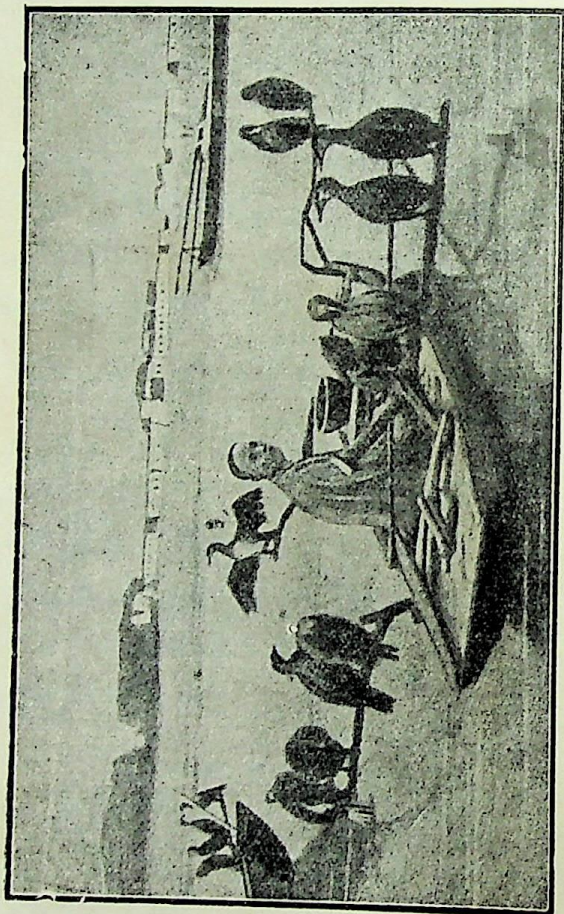
मछली पकड़ने का विचित्र ढंग

मछली के शिकार का एक विशेष ढङ्ग

चीनी लोग मछली पकड़नेवाली चिड़ियों को पालते हैं। इन चिड़ियों को ये लोग इस तरह सिखाते हैं, जैसे कि हम लोग बाज़ पक्षी को सिखा लेते हैं। ये लोग इन चिड़ियों को नदी-तट पर ले जाते हैं और उनके पैर में डोरी बाँधकर नदी में छोड़ देते हैं। जब चिड़िया मछली पकड़ लेती है तब ये लोग उसे किनारे पर खींच लेते हैं। सोचो, चीनी लोग मछली का शिकार करने में कितने होशियार होते हैं! इन चिड़ियों को सिखाने में काफ़ी दिन लगते हैं। वे लोग कुछ नियत समय तक इन्हें नदी-तट पर ले जाकर सिखाते हैं। दूसरे वर्ष वे काम देने लगती हैं।

चीनी लड़कियों के पैर

चीनी लोगों में कुछ ऐसी विचित्र रीतियाँ प्रचलित हैं, जिनके सम्बन्ध में केवल इसके सिवा कि ये प्राचीन काल से चली आ रही हैं और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इन्हीं रीतियों में से एक रीति लड़कियों के पैर बाँधने की है। यह अत्यन्त हानिकारक रीति है। आज-कल तो इसकी प्रथा बहुत ही कम रह गई है, परन्तु पुराने समय में इसका चलन बहुत था। पंजे को एड़ी की ओर मोड़कर एक पट्टी के द्वारा बड़ी ही मज़बूती से बाँध देते हैं और फिर २½ इंच से लेकर ५ इंच तक के लोहे के जूते पहना देते हैं। इस तरह से चीनी लड़कियों के पैर छोटे कर दिये जाते हैं। भला सोचो तो, यह कितनी बुरी रीति है?

रामू--पैर छोटे कर देने से क्या लाभ ?

मोहन बाबू—चीनी लोग छोटे पैरवाली लड़कियों को अधिक सुन्दर समझते हैं।

रामू—तो इस तरह वहाँ भी लड़कियों के पैर सुन्दर बनाये जाते हैं? परन्तु सुन्दर तो क्या वे और भी भद्दे हो जाते होंगे।

मोहन बाबू--और नहीं तो क्या। निःसन्देह यह रीति बड़ी ही बुरी है। चीनी लोग बड़े ही सभ्य तथा सुशील होते हैं। उनकी कुछ बातें सारे संसार के लिए अनुकरणीय हैं। मैं तुमको एक घटना सुनाता हूँ जिससे तुम्हें यह अनुमान भली भाँति हो जायगा कि वे केवल अपने बड़ों के ही प्रति नहीं सम्मान प्रदर्शित करते वरन् छोटे बच्चों का भी बड़ा ही आदर करते हैं।

एक विचित्र घटना

डाक्टर कैम्बेल का कथन है कि एक यात्री संध्या-समय एक गाँव में कुछ बातचीत कर रहा था। इसी बीच में एक बच्चे को गोद में लिये हुए वहाँ एक स्त्री आई। प्रत्येक व्यक्ति ने, यहाँ तक कि गाँव के मुखिया ने भी, खड़ा होकर उस बच्चे का स्वागत किया। उस यात्री ने इन लोगों से पूछा कि आप लोग इस बच्चे के स्वागत के लिए खड़े क्यों हुए। उनमें से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया कि यह बच्चा हमारे वंश का सरदार है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम लोग इसका सम्मान करें।

द्वारों पर भयानक चित्र

चीनी लोग अपने घरों के द्वारों तथा फाटकों पर बड़ी ही भयानक तथा डरावनी तस्वीरें बना देते हैं। धनी लोग तो ऐसी तस्वीरों को अपने दरवाज़ों पर खुदवा देते हैं या लकड़ी के फ्रेमों में जड़वाकर मकान के पास ही लगवा देते हैं। साधारण अवस्था के चीनी, जो इस भाँति की तस्वीरें नहीं बनवा सकते, कम से कम काग़ज़ पर ही डरावनी तस्वीरें बनाकर किवाड़ों पर चिपका देते हैं।

रामू—ऐसी डरावनी तस्वीरें दरवाज़ों पर क्यों लगाते हैं ?

मोहन बाबू—तुम सुनकर हँसोगे। उन लोगों का विश्वास है कि डरावनी तस्वीरों के डर के कारण भूत-प्रेत आदि उनके घरों में आने का साहस कभी नहीं करेंगे। इसी लिए चीनी लोग भयानक से भयानक चित्र बनाकर लगाते हैं। तस्वीर जितनी ही अधिक भयानक होती है उतनी ही अधिक वह पसन्द की जाती है।

रामू—यह ख़ूब रही।

चीन में बच्चे के जन्म की रीतियाँ

आज मोहन बाबू के छोटे भाई सोहन बाबू का पत्र विलायत से आया है। वे बैरिस्टरी पास हो गये हैं और जुलाई के अन्तिम सप्ताह में अपने घर आ जावेंगे। रामू की दादीजी को सोहन बाबू के ब्याह की चिन्ता लग गई है। कोठी की रँगाई-पुताई आरम्भ हो गई है। बरेली से तरह-तरह का बढ़िया फ़रनिचर मँगाया गया है। कमरों में क़ीमती परदे टाँगे जा रहे हैं। मतलब यह

कि हर एक चीज़ बड़ी सुन्दरता के साथ और सुरुचिपूर्ण ढङ्ग से सजाई जा रही है। रामू यद्यपि इस प्रबन्ध में पूरा-पूरा हिस्सा ले रहा है फिर भी चीन के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा उसके दिल में उसी भाँति बनी हुई है। रात्रि में जब इस प्रबन्ध की भड़भड़ कुछ कम हुई और मोहन बाबू भी थककर बाहर एक आराम-कुर्सी पर लेट गये तब नित्य की भाँति रामू भी अपने चाचाजी के पास आकर एक कुर्सी पर बैठ गया। थोड़ी देर तक तो विलायत की डाक, बैरिस्टरी, बग, गाउन तथा गाड़ियों के बारे में बातचीत होती रही और अन्त में रामू ने चीन के सम्बन्ध में प्रश्न करने आरम्भ कर दिये।

मोहन बाबू--भाई, आज तो मैं बहुत ज्यादा थक गया हूँ। अच्छा हो कि इस चर्चा को कल के लिए स्थगित कर दो।

रामू--बहुत अच्छा चाचाजी।

मोहन बाबू--क्यों भाई, यह साईस आज कहाँ चला गया है?

रामू--उसके यहाँ बच्चा पैदा हुआ है, वह उसकी झाड़-फूँक के लिए किसी के पास गया है।

मोहन बाबू--(मुस्कुराते हुए) झाड़-फूँक के लिए?

रामू--जी हाँ।

मोहन बाबू--आख़िर बात में बात पैदा हो ही जाती है। मैंने तो सोचा था कि चीन के सम्बन्ध की चर्चा आज स्थगित हो रक्खूँ, पर झाड़-फूँक और टोटके पर बात याद आ ही गई।

रामू--वह किस भाँति?

मोहन बाबू--वह इस तरह कि चीनी लोग भी हम भारत-वासियों की भाँति बच्चा पैदा होने पर तरह-तरह के टोटके किया करते हैं। उत्तरी चीन में लड़कों और दक्षिणी चीन में लड़कियों के जन्म के अवसर पर विचित्र-विचित्र सामान इकट्ठा किये जाते हैं। कुछ प्रान्तों में इन रीतियों में अन्तर भी होता है। मगर द्वार पर जब सोंठ लटका दी जाती है तो यह पता चल जाता है कि इस घर में बच्चा पैदा होनेवाला है। जब बच्चे के जन्म लेने का समय होता है तो जच्चा की सास अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोबान आदि सुलगाती है। उस अवसर पर "दया की देवी" तथा बुद्धजी का प्रसाद चढ़ाया जाता है। और भी दूसरे देवता हैं जिनको भेंटें चढ़ाई जाती हैं। फिर पितरों के नाम का चढ़ावा भी चढ़ाया जाता है, ताकि बच्चा आनेवाली बलाओं से सुरक्षित रहे और उसके जन्म में कुछ परेशानी न हो।

बच्चे को पुराने कपड़े पहनाना

पैदा होने के दिन से बच्चे को लगातार एक महीने तक बड़े-बूढ़ों के पुराने कपड़े पहनाये जाते हैं। मुंडन-संस्कार तक इन पुराने कपड़ों के अतिरिक्त और कुछ नहीं पहनाया जाता। साधारण तौर पर यह संस्कार चीनियों में बड़ा ही पवित्र समझा जाता है। वहाँ के लोगों का विश्वास है कि पुराने कपड़े पहनाने से बच्चे ज्यादा दिनों तक जीवित रहते हैं। मुंडन-संस्कार एक महीने के बाद होता है। उस समय बच्चे को दूध का नाम दिया जाता है, फिर

उसे नहलाते हैं और तब उसे नया कपड़ा पहनाते हैं। यह कपड़ा ज्यादातर लाल रङ्ग का होता है। इसके लिए ज्योतिषी बुलाया जाता है जो सहभोज के लिए एक शुभ दिन नियत करता है। बच्चा अगर लड़का है और पहलौठी का है तो बड़ी ही धूमधाम से सहभोज किया जाता है। इस सहभोज में खाने के लिए सिरके में मिली हुई सोंठ तथा रँगे हुए अंडे अवश्य होते हैं। अतिथियों को बुलाने के लिए मौखिक सन्देश के साथ एक रङ्गीन अंडा भी भेजा जाता है। मुंडन के समय कोई धार्मिक रीतियाँ नहीं होतीं, परन्तु घर के देवी-देवताओं को लोबान की धूनी अवश्य दी जाती है और ऐसे अवसर पर लोग मन्दिरों में भी जाते हैं। हाँ, बच्चे के माता-पिता बहुत ही कम जाते हैं। मन्दिर आदि में जाने की प्रथाएँ अधिकतर लड़के की दादी करती है। लड़के के ननिहाल तथा और दूसरे सम्बन्धियों के यहाँ से उपहार आदि भी आते हैं। उपहार में कपड़े तथा खाने-पीने की चीज़ें होती हैं। यद्यपि बच्चा एक ही मास का होता है, पर उपहार में उसके लिए रुपये भी आते हैं।

खेल-कूद

और देशों की भाँति चीनी लड़के बहुत तरह के खेल नहीं खेलते। इन लोगों में कुछ खेल नियत हैं और उनकी हार-जीत के ढङ्ग भी नियत हैं। परन्तु बच्चों के लिए छोटे-छोटे बहुत से खिलौने प्रचलित हैं। काग़ज़ की लालटेन, पतंग और गेंद आदि से जो तरह-तरह की होती हैं, बच्चे बड़ी ही रुचि से खेलते हैं। पच्छिमी खेलों में चीनी युवक टेनिस तथा गोली खेलने में काफ़ी होशियार होते हैं।

चीनियों में सहभोज की प्रथा

रामू—सुनते हैं कि चीनियों के खाने-पीने के ढंगों में बड़ी ही विचित्रता होती है। कुछ उसका हाल बताइए।

मोहन बाबू—हाँ, चीनियों के सहभोज निस्सन्देह बड़े ही मनोरञ्जक होते हैं। कुछ मुख्य-मुख्य तथा बड़े सहभोजों में चीनी स्त्रियाँ नहीं सम्मिलित होतीं। चीन के उन भागों में, जहाँ अभी पच्छिमी सभ्यता का प्रभाव नहीं पड़ा है, उच्च घरानों की स्त्रियाँ पुरुषों के साथ सहभोज में सम्मिलित होना बुरा समझती हैं। चीनियों के खाने की चीज़ों की सूची काफ़ी बड़ी होती है। इन खाने की चीज़ों में 'चिड़िया का घोंसला' नाम की चीज़ बड़ी ही विचित्र होती है।

रामू—'चिड़िया का घोंसला' कौन सी खाने की चीज़ होती है?

मोहन बाबू—'चिड़िया का घोंसला' एक विशेष प्रकार का भोजन है। एक प्रकार का समुद्र का पक्षी, जो बड़ी ही फुर्ती से फुदकता है, अपने घोंसले में कुछ सफ़ेद रङ्ग की कफ़ (बलग़म)-जैसी चीज़ जमा करता है। चीनी लोगों के मुख्य-मुख्य सहभोजों में इसके घोंसले का शोरबा बनाया जाता है।

रामू (मुँह बनाकर)—छिः, छिः, ये लोग बड़े गंदे होते हैं।

मोहन बाबू—अभी इनकी दूसरी रुचि का तो हाल सुनो। बहुत बड़े-बड़े और शानदार सहभोजों के अवसर पर हरे रङ्ग

२

के कीड़ों का भी उपयोग किया जाता है। मेढकों का मांस भी बनाया जाता है और ये लोग इसे बड़े स्वाद से खाते हैं।

चीनियों का नाटक

मैं तुम्हें आरम्भ में ही बता चुका हूँ कि चीनी लोग पच्छिमी रहन-सहन को बड़ी तेज़ी से अपना रहे हैं। इसी लिए पच्छिमी देशों की भाँति चीन में भी अब बहुत अधिक नाटक खेले जाने लगे हैं। सच तो यह है कि चीनी नाटक बड़े ही डरावने होते हैं। परन्तु इसके उन्नायक यह समझते हैं कि हमने जीवन की पूर्णता का भेद जान लिया है। इन नाटकघरों में जो खेल खेले जाते हैं उनके आदि और अन्त का ज्ञान होना बड़ा ही कठिन है। जब जाकर देखिए तब यही जान पड़ेगा कि यह खेल का बीच का ही अंश है। खेल के कथोपकथन बहुत लम्बे होते हैं। उनके हाव-भाव-प्रदर्शन का ढंग बड़ा ही असभ्य होता है। शोर तो इतना अधिक मचता है कि कान के पर्दे फट जाते हैं। लेकिन चीनी दर्शक बड़े आनन्द के साथ इन खेलों को देखते हैं। ये लोग नाटक को अन्य आमोद-प्रमोदों की अपेक्षा बड़ा ही सुरुचिपूर्ण समझते हैं। यद्यपि नाटक करनेवालों का स्थान समाज में केवल नाई के समान समझा जाता है।

चीनी बाजे भी बड़े ज़ोर से बजनेवाले होते हैं। उनकी भी आवाज़ें इतनी तेज़ होती हैं कि कान के पर्दे फटने लगते हैं। ऐसा पता चलता है कि चीनियों को स्वर और राग का ज्ञान किञ्चिन्मात्र

विवाह की तैयारी

भी नहीं है। उनके नाटकों में भी जो बाजा बजता है वह ढब ढब के सिवा और कुछ भी नहीं सुनाई देता।

खेलों में जुए का प्रचार बहुत है। छोटे, बड़े, धनी और ग़रीब सभी लोग इसमें भाग लेते हैं। जुए के खेलों की इतनी क़िस्में हैं कि उनका याद रखना असम्भव है। इन खेलों को खेलने के लिए अभ्यास की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

चीनियों में विवाह की प्रथाएँ

विवाह के अवसरों पर काफ़ी प्रबन्ध करना पड़ता है। इसलिए विवाह के लिए एक शुभ दिन और शुभ मुहूर्त का विचार किया जाता है। फिर वर-वधू की जन्म-तिथियाँ मिलाई जाती हैं, कभी-कभी वर-वधू के माता-पिताओं के जन्म की तिथियाँ भी मिलाई जाती हैं। इतना ही नहीं, और भी बहुत सी व्यर्थ की बातें होती हैं जिनसे विवाह का कोई भी सम्बन्ध नहीं होता।

चीनवालों के यहाँ विवाह की बात-चीत नाइन के द्वारा तय होती है। सबसे पहले विवाह के सम्बन्ध में ज्योतिषी से सलाह ली जाती है। उनके अच्छा बता देने पर वधू के घरवालों को उपहार दिये जाते हैं और विवाह के लिए प्रार्थना की जाती है। विवाह की सारी शर्तें कागज़ पर लिखी जाती हैं। कुछ नियत धन लड़की के घरवालों को दिया जाता है। विवाह का सारा सामान बहुत पहले भेज दिया जाता है। केवल वही उपहार बारात के साथ ले जाये जाते हैं जो वर वधू को देता है। विवाह के समय वधू

एक 'ब्याह की कुर्सी' पर, जो लाल रंग की होती है, बैठाली जाती है। यद्यपि वधू बहुत अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनती है पर उसका शृङ्गार बिलकुल नहीं किया जाता। इसका कारण यह बताया जाता है कि वर वधू को वास्तविक अवस्था में देख ले।

वधू जब अपनी ससुराल में आती है तब बड़ी सावधानी से अपने चेहरे पर अवगुण्ठन डाले रहती है। वहाँ वर उसके स्वागत के लिए खड़ा होता है। इससे यह प्रदर्शित किया जाता है कि गृह-स्वामी वही है। वधू जब वर के सम्मुख पहुँचती है तब वह उसके पैरों पर झुकती है जो आज्ञाकारिणी होने का एक चिह्न समझा जाता है। इसके बाद वह अपना घूँघट खोल देती है। फिर पितरों की आत्माओं की अर्चना-वन्दना की जाती है। इन सब के बाद वधू वर के पास बैठती है। इसके दूसरे दिन सह-भोज होता है। सहभोज में वधू पहले अपनी सास तथा ससुर के खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध करती है। इन सब झंझटों के बाद वधू को अपनी ससुराल में खाने का अवसर मिलता है।

चीनियों के त्योहार

नौ रोज़

रामू एक किताब लेकर पढ़ रहा था, इतने में मोहन बाबू ने उसे पुकारा और कहा कि आओ आज तुम्हें चीनी त्योहारों के सम्बन्ध में बतावें। रामू .खुश होकर एक कुर्सी पर आकर बैठ गया और चाचाजी की ओर ध्यान लगाकर देखने लगा।
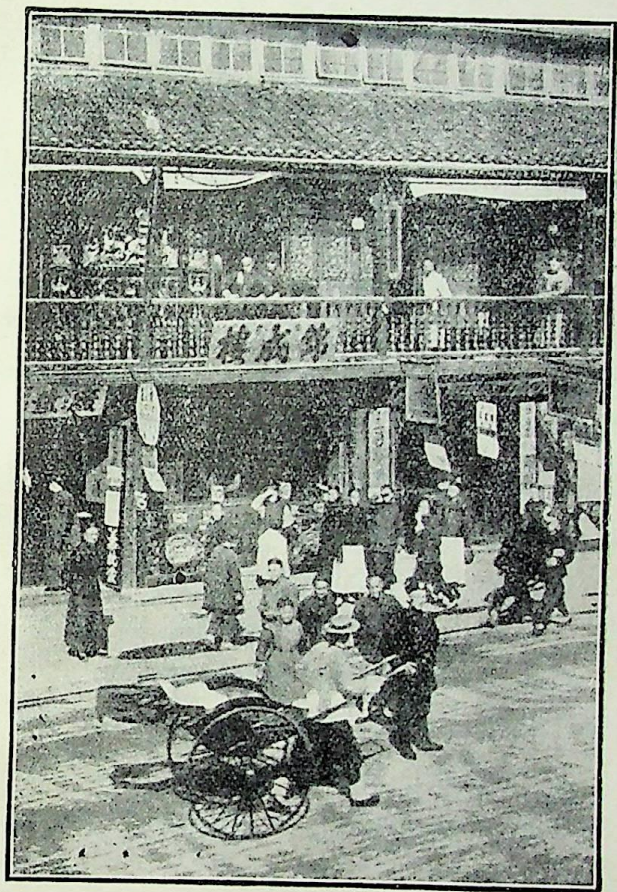
नौरोज़ की ख़ुशी

मोहन बाबू—अच्छा सुनो, चीनियों के कुल त्योहारों में नौरोज़ का एक विशेष स्थान है। यह त्योहार चीनियों के हिसाब से जनवरी के अन्त या फ़रवरी के आरम्भ में होता है। इस अवसर पर जो सहभोज होते हैं वे एक दिन से लेकर सात-सात दिन तक बराबर होते रहते हैं। इन सहभोजों का समारोह करनेवालों की हैसियत के अनुसार होता है। इन सहभोजों के अतिरिक्त उस अवसर पर साधारण तौर से बाज़ारों में और सड़कों पर रोशनी भी होती है। तरह-तरह की रङ्गीन लालटेनों तथा अन्य दूसरी सुन्दर चीज़ों से मकान के दरवाज़े तथा खिड़कियाँ सजाई जाती हैं। साधारण श्रेणी के लोग केवल रङ्गीन काग़ज़ों से ही अपने घरों को सजा लेते हैं। लेकिन धनी लोगों के मकान सुन्दर-सुन्दर फूलों से सुसज्जित किये जाते हैं। इस अवसर पर नरगिस का फूल सबसे सुन्दर समझा जाता है और इसी फूल से अधिकतर मकान सजाये जाते हैं। नववधुएँ अपने कमरों में फूलों के गमले कुछ दिन पहले से ही रख लेती हैं और ऐसा प्रयत्न करती हैं कि इनकी कलियाँ नौरोज़ पर ही खिलें। यह चीनियों में बड़ा शुभ सगुन समझा जाता है। उनका विश्वास है कि अगर नौरोज़ पर कलियाँ खिलती हैं तो साल के अन्दर ही उनके यहाँ पुत्र का जन्म होता है। इतना ही नहीं, वरन् जिसका लगाया हुआ फूल का पौदा नौरोज़ पर खिलता है उसके लिए वह बड़ा ही शुभ और सौभाग्य का लक्षण समझा जाता है। इसी अवसर पर सुन्दर से सुन्दर आतिशबाज़ी भी छुड़ाई जाती है और चीन देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक

पटाखों की आवाज़ें सुनाई देती हैं। यद्यपि ये आवाज़ें कानों को बहुत ही बुरी लगती हैं, परन्तु उनका विश्वास है कि इन आवाज़ों से देवता प्रसन्न होते हैं और प्रेत-आत्माएँ उनके आनन्द में गड़-बड़ करने का साहस नहीं कर सकती हैं। चीन में आतिश-बाज़ियाँ तथा पटाखों का बहुत चलन है। आतिशबाज़ियाँ हर अवसर पर छुड़ाई जाती हैं। आतिशबाज़ी और पटाखों के छुड़ाने का उनका उद्देश्य यह होता है कि इसकी आवाज़ से बुरी आत्माएँ डरकर भाग जाती हैं।

रामू—क्या सचमुच ऐसा होता है?

मोहन बाबू—नहीं जी, तुम भी क्या बातें करते हो? हाँ, यह हो सकता है कि गन्धक के धुएँ इत्यादि से वायु शुद्ध होकर स्वास्थ्य के लिए कुछ लाभदायक प्रमाणित हो जाय। लेकिन अच्छी और बुरी आत्माओं से तथा पटाखों और आतिशबाज़ी से क्या सम्बन्ध है?

रामू—हाँ, तो फिर और क्या होता है?

मोहन बाबू—आतिशबाज़ी तथा पटाखों के अतिरिक्त इस अवसर पर जुलूस भी निकाले जाते हैं। इन जुलूसों में रङ्गीन काग़ज़ों की लालटेनों से रोशनी की जाती है और काग़ज़ के बने हुए तरह-तरह के जानवर आदि जुलूस के साथ निकाले जाते हैं। काग़ज़ के बने हुए घोड़े, सिपाही, बैल और सुन्दर-सुन्दर मकान आदि जुलूस के साथ चलते हैं। इन चीज़ों से जुलूस की शोभा द्विगुणित हो जाती है।

कुमाश अर्थात् भेंटें

उपहारों या भेंटों को चीनी लोग 'कुमाश' कहते हैं। इस प्रथा का चलन दूसरे देशों की भाँति यहाँ भी है। ये भेंटें अमूल्य से अमूल्य रत्नों से लेकर चावल की रोटियों की टोकरी तक की दी जाती हैं। मिलने-जुलनेवालों के यहाँ ये उपहार नावों में सजाकर भेजे जाते हैं। इसका अर्थ यह होता है कि इन उपहारों में से वह कोई वस्तु पसन्द करके ले ले और अपनी ओर से कोई दूसरा उपहार उसी जगह रख दे। दूसरे देशों के निवासी, जो इस प्रथा से अनभिज्ञ होते हैं, कभी-कभी ग़लती से सब के सब उपहार ले लेते हैं। इस प्रकार की घटना को उपहार भेजनेवाले अशुभ समझते हैं। पिछले सम्बन्धों की प्रेममयी स्मृति जीवित रखने के लिए ये उपहार और भेंटें प्रायः मित्रों तथा सम्बन्धियों को दी जाती हैं। इन उपहारों के लिए नौरोज़ का समय ही उचित समझा जाता है। वैसे तो चीन में उपहारों का चलन यहाँ तक है कि बड़े-बड़े पदाधिकारी और राज-कर्मचारी भी उपहार लेने में किञ्चित् मात्र नहीं हिचकते।

उपहार का उलटा प्रभाव

सुना जाता है कि हाङ्ग-काङ्ग नगर में एक अँगरेज़ मजिस्ट्रेट था। उसको भी उपहार तथा भेंटें भेजी गईं। मगर उसने उन सबको केवल इसी लिए वापस कर दिया कि कहीं उपहार भेजने-

वाला उससे अनुचित लाभ उठाना तो नहीं चाहता। जिन लोगों ने बड़े उत्साह तथा प्रसन्नता से ये उपहार भेजे थे उनको इस घटना से बड़ा ही कष्ट हुआ और जो प्रथा पिछले सम्बन्ध की प्रेममयी स्मृति को स्थिर रखनेवाली समझी जाती थी, वह अप्रसन्नता का कारण हो गई।

ऋण चुकाना

जापान की भाँति चीन में भी ऋण चुकाने के लिए एक दिन नियत है और वह यही नौरोज़ है। यदि इस अवसर पर भी कोई किसी का ऋणी रह जाता है तो वह बड़ा ही पतित तथा अपमानित समझा जाता है। प्रत्येक चीनी यही प्रयत्न करता है कि नौरोज़ के दिन किसी न किसी भाँति वह ऋण चुका दे। इसी लिए नौरोज़ की शाम को चीनी लोग अपने घर का सामान बेचते हुए बाज़ारों में दिखाई देते हैं। जहाँ तक सम्भव होता है, चीनी लोग उस दिन अपना ऋण अवश्य चुका देते हैं। इस अवसर पर वस्तुओं का मोल-भाव भी भली भाँति नहीं किया जाता है और आधा-पौना जो कुछ भी मूल्य मिल जाता है वह बहुत समझा जाता है। यही कारण है कि इस अवसर पर हाथीदाँत तथा चिकन की सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ बड़े ही सस्ते दामों में मिल जाती हैं। और चीज़ों की तो कौन कहे, इस दिन चीनी लोग अपने देवताओं की मूर्तियाँ तक बेच डालते हैं; यद्यपि इन मूर्तियों का बेचना उनके जीवन की बड़ी ही दुःखद घटना होती है। उनका विश्वास

है कि घर की मूर्तियाँ बेच डालने से घर सुरक्षित नहीं रहता, भूत-प्रेतों के आक्रमणों का भय सदा बना रहता है। इस कारण जब तक वे बिलकुल ही विवश नहीं हो जाते तब तक वे मूर्तियों को नहीं बेचते।

रामू—अच्छा चाचाजी! और कौन-कौन सी .खुशियाँ इस त्योहार पर मनाई जाती हैं?

मोहन बाबू—नौरोज़ का समय चीनियों के लिए बड़ा ही आनन्ददायक होता है। ये लोग उस दिन अपने मित्रों-सहित किसी रमणीक स्थान पर घूमने जाते हैं और वहाँ .खूब ही आनन्द मनाते हैं। इस समय ऐसा एक भी चीनी दृष्टिगोचर न होगा, जिसका मुख प्रसन्नता से खिला हुआ न हो। इस त्योहार को सब चीनी अपना जन्मसिद्ध त्योहार मानते हैं और इसे सभी लोग अपना जन्मदिन समझते हैं।

रामू—नौरोज़ का समय सबके जन्मों का दिन कैसे हो सकता है?

मोहन बाबू—यही तो मजे़ की बात है कि असली जन्मतिथि कोई भी हो, लेकिन नौरोज़ को यह समझ लिया जाता है कि हर मनुष्य की आयु में एक वर्ष की वृद्धि हो गई है। वे लोग इसे मान ही नहीं लेते, वरन् नियमानुकूल इसका व्यवहार भी करते हैं। यदि कोई बच्चा नौरोज़ के अवसर पर दो सप्ताह का हो तो वह नौरोज़ के पश्चात् क़ानून के अनुसार दो वर्ष का मान लिया जावेगा।

रामू—वाह भाई, यह तो अच्छी दिल्लगी है। अच्छा, इसके अतिरिक्त और कौन-कौन से त्योहार मनाये जाते हैं ?

मोहन बाबू—इस त्योहार के अतिरिक्त और भी बहुत से छोटे-छोटे त्योहार मनाये जाते हैं, मगर इस राष्ट्रीय त्योहार के सम्मुख वे व्यर्थ मालूम होते हैं। हाँ, एक त्योहार और ऐसा होता है जिसका कुछ महत्त्व है। उसे अज़दहे का त्योहार कहते हैं।

रामू—अज़दहे का त्योहार कैसा होता है ?

मोहन बाबू—अज़दहे का त्योहार आरम्भ में जल-विहार का एक त्योहार था। इस अवसर पर डोंगियों के बेड़े के बेड़े ख़ूब सजाये जाते थे और फिर इन सजी हुई नावों के बेड़े को ३०, ४० आदमी खेते थे। इन बेड़ों की शक्ल ठीक दोमुँहे साँप की सी होती थी। डोंगियों और नदीतट पर रोशनी की जाती थी। सहभोजों की भी धूम रहती थी। प्राचीन काल की किंवदन्ती के आधार पर इसका यह इतिहास बताया जाता है कि एक बहुत ही सज्जन पुरुष नदी में डूबकर मर गया था। इसके एक वर्ष पश्चात् लोग उसके शव को खोजने के लिए नावों का एक बेड़ा लेकर गये थे।

रामू—परन्तु इस त्योहार का नाम अज़दहे का त्योहार क्यों पड़ा ?

मोहन बाबू—अज़दहे की कथा इस भाँति कही जाती है कि जो महापुरुष नदी में डूबकर मर गया था, उसका पीछा किसी अज़दहे ने ही किया था और उससे अपनी रक्षा करने में ही वह नदी में

गिर पड़ा था। इसलिए इस त्योहार का नाम अज़दहा या अजगर है।

नित्य की भाँति जब रामू अपने चाचाजी के पास आकर बैठा तो चीन के बारे में प्रश्न करने लगा।

रामू—चाचाजी! चीनी लोग अपने देश में किस भाँति रहते हैं?

चीनियों का साधारण रहन-सहन

मोहन बाबू—यदि किसी धनी मांचू या उच्च पदाधिकारी के मकान पर जाकर चीनियों का रहन-सहन देखो तो तुम्हारी आँखें खुल जावें। बढ़िया से बढ़िया चिकन, सुन्दर से सुन्दर बर्तन, हाथीदाँत की बनी हुई कलापूर्ण वस्तुएँ तथा स्त्री और पुरुषों के भाँति-भाँति के वस्त्र बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे हुए दिखाई देंगे। इन लोगों के यहाँ क़ालीनों के स्थान पर मूल्यवान् कम्बल बिछे रहते हैं और आजकल तो पच्छिमी ढंग की कुर्सियाँ उनके कमरों की शोभा बढ़ा रही हैं। लेकिन कुर्सियाँ और मेज़ केवल उन्हीं लोगों के कमरे में दिखाई देंगी जो पच्छिमी सभ्यता के रंग में रँगे हुए हैं। साधारण तौर से धनी चीनियों के मकानों में सजावट तो ख़ूब होती है पर मकान आरामदेह नहीं होते। इनमें देखने भर को टीमटाम होती है। यहाँ ऐसे मकान अधिक बनाये जाते हैं, जिनमें कई दरवाज़े होते हैं और वे कई अहातों से घिरे हुए होते हैं। खिड़कियों में

शीशे लगाये जाते हैं, परन्तु मध्यम श्रेणी के लोगों के मकानों की खिड़कियों में शीशे के बजाय एक भाँति का रङ्गीन मोमी काग़ज़ लगाया जाता है। रहने और सोने के कमरों को अलग करने के लिए बाँसों की जालियाँ लगा दी जाती हैं। इन जालियों का कोई विशेष उपयोग तो होता नहीं है, कमरे की जगह अवश्य घिर जाती है। ये लोग अपने कमरों में तस्वीरें नहीं लगाते। हाँ, कहीं-कहीं कैम्बनो (जापानियों की नक़ल) अवश्य दिखाई पड़ जाते हैं।

रामू—कैम्बनो क्या चीज़ होती है?

मोहन बाबू—यह एक तरह की पोशाक होती है जो गाउन और चोग़े से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है। हाँ, कमरों की सजावट के लिए चीन में एक चीज़ का बहुत चलन है और वह है पितरों का कफ़न।

रामू—क्या? कफ़न को कमरों को सजाने के लिए रखते हैं? आख़िर इसका क्या अर्थ है?

मोहन बाबू—कफ़न को रखना चीनियों की एक धार्मिक रीति है। चीनी लोग किसी भी दशा में कफ़न को अपने पास से दूर करना नहीं चाहते। जब कभी मकान बेचने या गिरवीं रखने का अवसर आता है तब भी ये लोग कफ़न को अपने साथ ही ले जाते हैं।

विचित्र मकान

चीनियों के घरों का विवरण देना कोई साधारण बात नहीं है। एक विशेष प्रकार के मकान के सम्बन्ध में तुम्हें बताता हूँ।

बाँस का एक मकान
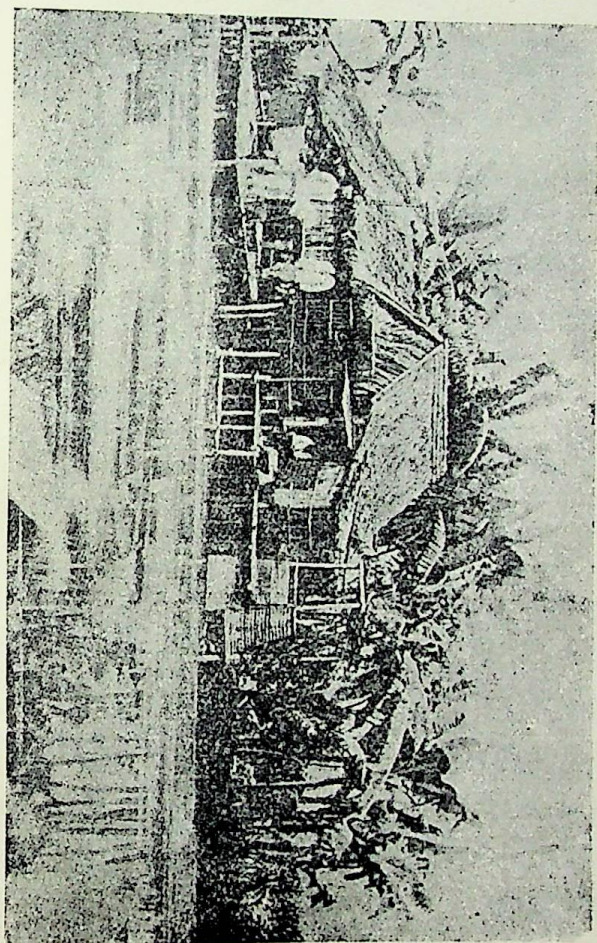
बाँस के लम्बे-लम्बे डंडों के मिलाकर और बाँस की ही पत्तियों से उसे बिनते हैं। इस भाँति लगभग १ घंटे में एक मकान तैयार हो जाता है। इसकी विशेषता केवल यही नहीं है कि वह सस्ता होता है, वरन् यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर बड़ी ही सरलता से हटाया जा सकता है। आजकल ऐसे ही मकानों की अधिकता है। अब तो ईंटों की चहारदीवारी उठाकर चटाइयों की छतें लगा दी जाती हैं और चटाइयों की दीवारों से अलग-अलग कमरे बना दिये जाते हैं।

चीनियों की वेश-भूषा

चीनियों में एक साधारण चलन यह है कि ये लोग एक नीले रंग का चोग़ा पहनते हैं। इसे स्त्रियाँ भी पहनती हैं। इनकी समझ से वह पोशाक ख़राब समझी जाती है, जिससे बदन का चढ़ाव-उतार दिखाई दे। मांचू तथा उच्च घरों की स्त्रियाँ तरह-तरह की सुन्दर वस्तुओं से अपना सिर सजाया करती हैं। लेकिन इनके अतिरिक्त अन्य स्त्रियाँ भाँति-भाँति से अपने सिर का शृंगार करती हैं। विवाहित स्त्रियों के बाल नाई ठीक करते हैं। ये लोग अपने बालों में एक प्रकार के गोंद का प्रयोग अधिकतर करती हैं। पिनों और काँटों के द्वारा ये अपने बालों को एक निराले ही ढङ्ग से सजाती हैं। आम तौर पर कुमारी तथा छोटी लड़कियाँ केवल चोटी ही गूँथती हैं। ये चोटियाँ खोली नहीं जातीं। जब लड़की का पिता उसकी शादी करने का विचार करता है तब लाल

रङ्ग का एक रेशमी गुच्छा उसकी चोटी में गूँथ दिया जाता है और अगर रेशमी गुच्छा नहीं मिल पाता तो घोड़े के बालों का प्रयोग किया जाता है।

चीन की स्त्रियाँ

चीन में प्रत्येक मनुष्य का विवाह छोटी अवस्था में ही हो जाता है। अविवाहित पुरुष यहाँ ढूँढ़ने पर ही मिलेगा। केवल भिक्षु तथा योगी ही अविवाहित होते हैं। यदि कोई मनुष्य विवाह करने से इन्कार करता है तो वह राष्ट्र और समाज दोनों ही का द्रोही समझा जाता है। समाज में वह पतित समझा जाता है। ये लोग अपनी सन्तान को धन और सम्पत्ति से भी अधिक प्यार करते हैं; क्योंकि इनका विश्वास है कि सन्तान-द्वारा अन्तिम संस्कार होने पर ही मनुष्य को निर्वाण-पद मिलता है। वैसे विवाह तो एक ही होता है, परन्तु यदि पुरुष चाहे तो और स्त्रियाँ भी बैठाल सकता है, परन्तु वे विवाहित स्त्री के पद को नहीं पातीं। इन रखेल स्त्रियों की सन्तानों में कोई विशेष अन्तर नहीं समझा जाता। यदि प्रथम पत्नी का स्वर्गवास हो जावे तो दूसरा विवाह कर लिया जाता है और उसे पहली ही पत्नी समझा जाता है। अधिकतर कुटुम्बों में पत्नी एक दासीमात्र ही समझी जाती है। पति की दासी तो वह होती है, पर सास की भी सेवा वह दासी की ही भाँति करती है। फलतः इनका जीवन बड़ा ही नीरस होता है। वैसे पति तो अपनी पत्नियों पर कोई विशेष कठोरता का बर्ताव नहीं करते, मगर सासें अपनी बहुओं को बड़ी बुरी तरह डाँटती-

फटकारती रहती हैं। लेकिन जैसे ही बच्चा हुआ कि बहू का मान घर भर में बढ़ जाता है। घरवाले भी उसकी आवभगत करने लगते हैं। बच्चा कहीं लड़की निकला तो फिर उसका जीवन ही भार हो जाता है। बच्चा न होना भो बुरा समझा जाता है और इसी कारण बहुत सी स्त्रियाँ त्याग दी जाती हैं। सन्तान न होने पर गोद लेने की प्रथा भी प्रचलित है और यह कोई ज़रूरी बात नहीं कि गोद लिया हुआ लड़का उसी कुटुम्ब का हो। ऐसी दशा में जिस कुटुम्ब का लड़का गोद लिया जाता है उस कुटुम्ब को एवज़ में कुछ धन दिया जाता है। आम तौर पर बच्चा देनेवाला निर्धन ही होता है। आशय यह है कि चीनी स्त्री का जीवन केवल दो ही दशाओं में अच्छा होता है। प्रथम यह कि उसके कोई पुत्र हो या वह किसी की सास हो।

पति और पत्नी एक साथ बैठकर भोजन नहीं कर सकते। पत्नी के वस्त्र भी उस खूँटी पर नहीं टाँगे जा सकते जिस पर पति के कपड़े टँगे रहते हैं। और तो और, पत्नी अपने पति की कुर्सी पर भी बैठ नहीं सकती। सात साल से बड़े लड़के अपनी छोटी बहनों के साथ भोजन नहीं कर सकते। जिस समय घर के आदमियों की गणना की जाती है उस समय बहुत से पिता अपनी पुत्रियों की गिनती भी नहीं करते।

उच्च घरानों की स्त्रियाँ घर में ही रहती हैं। इसका एक कारण यह भी है कि उनके पैर बँधे हुए होते हैं। पाँव बाँधने की चर्चा तुमसे की जा चुकी है।

चोर को दण्ड

अच्छा और सुनो। चीन में चोर को दण्ड देने का विचित्र ढङ्ग प्रचलित है। चोर को लकड़ी के एक कठघरे में बन्द कर दिया जाता है। यह कठघरा इस ढङ्ग से बनाया जाता है कि चारों तरफ़ लम्बी-लम्बी लकड़ियाँ होती हैं और अन्दर की ओर केवल खड़े रहने भर का स्थान रहता है। इसमें न तो अभियुक्त लेट सकता है और न किसी भाँति आराम कर सकता है। उसके खाने-पीने का कोई भी प्रबन्ध नहीं किया जाता। लेकिन दान के रूप में कुछ लोग उसके मुँह में खाने-पीने की चीज़ें डाल देते हैं। कभी-कभी भूख-प्यास के कारण बन्दी मर भी जाता है। मरते समय प्रायः बन्दी उस कठघरे के सहित वादी के द्वार पर घसीटते हुए ले जाया जाता है क्योंकि उसे वादी के द्वार पर ही मरना चाहिए।

रामू—वादी के द्वार पर मरने से लोग क्या लाभ समझते हैं?

मोहन बाबू—इन लोगों का यह विश्वास है कि मरने के बाद उस बन्दी की प्रेतात्मा अपने वादी को सतायेगी और इस भाँति वह भी अपने शत्रु से बदला ले लेगी।

रामू—कितना अन्धविश्वास है!

डोंगियों पर जीवन-निर्वाह करनेवाले लोग

मोहन बाबू—तुमको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि चीन में कुछ ऐसे लोग भी बसते हैं जो डोंगियों पर अपना जीवन-निर्वाह करते हैं।
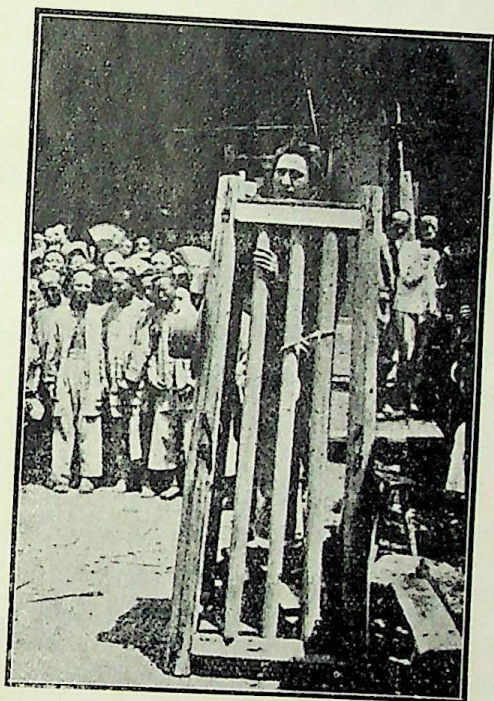
चोरी का दण्ड

रामू—अर्थात्, वे लोग क्या पृथ्वी पर नहीं बसते ?

मोहन बाबू—नहीं।

रामू—यह कैसे ?

मोहन बाबू—बात यह है कि रेल के कम होने के कारण यहाँ अधिकतर डोंगियों से ही काम लिया जाता है। डोंगियों-द्वारा यात्रा करने की अधिक प्रथा होने के कारण यहाँ एक ऐसी जाति बन गई है जो डोंगियों ही में जीवन व्यतीत करती है। डोंगियों में ही खाना, वहीं सोना और वहीं जीवन के सारे दिन व्यतीत करना उनका सदा का काम हो गया है। इन लोगों की एक अलग जाति ही बन गई है। उसी में ये लोग विवाह-सम्बन्ध करते हैं। इनमें से बहुत सी स्त्रियाँ ऐसी हैं जो जन्म से लेकर मृत्यु तक डोंगी के बाहर कभी नहीं निकली हैं। यहाँ तक कि वे अपने पिता के घर भी डोंगियों पर ही गई हैं और वहाँ भी डोंगियों पर ही रही हैं। मरने के बाद ही वे पृथ्वी पर उतारी गई हैं।

रामू—ये डोंगियों के निवासी तो विचित्र ढङ्ग से अपना जीवन व्यतीत करते होंगे। बेचारे लगातार डोंगियों में रहते-रहते ऊब उठते होंगे और इसलिए दुखी भी रहते होंगे।

मोहन बाबू—नहीं, ये तनिक भी दुःखी नहीं रहते, वरन् जब कभी तुम उन्हें देखोगे तब हँसते हुए ही पाओगे। एक डोंगी में एक कुटुम्ब रहता है और हर आदमी अपने-अपने काम में लगा रहता है। जिनका जीवन हर समय खतरे में रहता हो और जिन्हें ज़रा सी ग़लती हो जाने पर भी प्राण-हानि की आशङ्का हो, भला

ऐसे लोग भी कभी सुस्ती या लापरवाही से रह सकते हैं? कभी नहीं। यह बिलकुल स्वाभाविक ही है कि जो लोग हर घड़ी किसी न किसी काम में लगे रहते हैं और उनका काम ऐसा-वैसा न होकर साहसपूर्ण होता है, उनका जीवन बड़े ही आनन्द से व्यतीत होता है; क्योंकि उनको दुःख या थकावट के बारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिलता। यही कारण है कि ये डोंगियों पर रहनेवाले चीनी दूसरे चीनियों की अपेक्षा अधिक प्रसन्न-चित्त दिखाई देते हैं।

चीन की दीवाल

चीन की दीवाल का हाल तो तुमने सुना ही होगा। इसकी गणना संसार के सात आश्चर्य्यों में होती है। यह तातार की कारवाँ सड़क के किनारे-किनारे लगभग २०० मील तक लम्बी चली गई है। यह अनुमान बिलकुल ठीक नहीं है, क्योंकि चीन के उत्तर में यह दीवाल १५ हजार मील की लम्बाई में है। मैदानों के निकट यह केवल ईंट और पत्थरों का ढेर मात्र ही दिखाई देता है, मगर पेकिंग नगर के पास यह बड़ी शानदार बनी हुई है। यहाँ पर इसकी चौड़ाई लगभग २० फुट है। इसे देखकर निस्सन्देह बड़ा ही आश्चर्य्य होता है।

कहा जाता है कि जिन कारीगरों ने इस दीवाल का निर्माण किया था, वे दास थे और इसी लिए इनको पारिश्रमिक भी नहीं दिया गया था। यदि यह सत्य है तो २००० मील लम्बी और
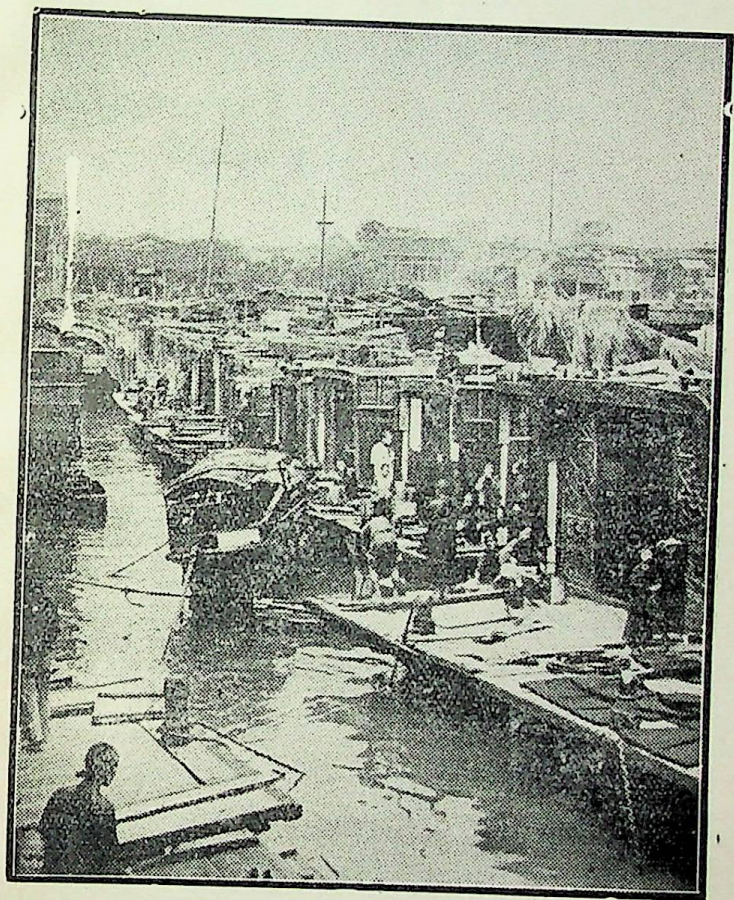
नौकाओं पर बने हुए घर

दस हज़ार फुट ऊँची दीवाल बनवाने के लिए विजयी मंगोलिया-निवासियों को कोई विशेष कष्ट न हुआ होगा। यह दीवाल उन लुटेरों से सुरक्षित रहने के लिए बनवाई गई थी जो उत्तरी चीन से आकर लूट-मार किया करते थे। इसका निर्माण-काल ईसा से २१४ वर्ष प्रथम माना जाता है।

चीन-निवासियों की शिक्षण-प्रणाली

स्कूल से आने के बाद रामू ने एक बहुत बड़ा पत्र अपने छोटे चाचाजी के नाम लिखा। रामू के छोटे चाचा मिस्टर श्यामलाल विलायत में थे। उनका पत्र आया था कि वे बैरिस्टरी की परीक्षा देने के बाद भारत वापस आ रहे हैं। रामू से यह कह दिया गया था कि वह जो कुछ भी विलायत से मँगाना चाहे स्वयं अपने चाचाजी को लिख दे। रामू को इस पत्र के लिखने में काफ़ी देर हो गई। वह कभी अपनी दादी से जाकर सलाह करता और कभी अपनी माताजी से। इसके अतिरिक्त उसे लिखने में भी बड़ी कठिनाई मालूम पड़ती थी। उसका स्वभाव कुछ ऐसा हो गया था कि दो पक्तियाँ लिखीं और फिर उन्हें काट दिया। न मालूम क्यों वह ऐसा करता था। इसलिए वह जो कुछ लिखना चाहता, वह बड़ी कठिनाई से लिख पाता था।

मोहन बाबू को भी पता था कि रामू आज अपने छोटे चाचाजी के नाम पत्र लिख रहा है। दो-एक बार वे रामू के कमरे से

मुस्कराते हुए निकले और बोले—क्यों भाई, अभी तुम्हारा पत्र ख़त्म नहीं हुआ ?

रामू—चाचाजी, अब समाप्ति ही पर है।

ख़ैर, किसी भाँति पत्र ख़त्म हुआ, नौकर को बुलाकर रामू ने उसे पोस्ट-बाक्स में डालने को कहा और चाचाजी के पास जाकर चीन के सम्बन्ध में पूछ-ताछ आरम्भ कर दी।

मोहन बाबू—आज तुमको मैं चीन के लिखने-पढ़ने का हाल सुनाऊँगा। सुनो।

चीनियों की वर्णमाला बड़ी ही विचित्र चीज़ है। इनका लिखने का ढंग निराला है।

इनको क़लम तथा पेंसिलों की भी आवश्यकता नहीं पड़ती; क्योंकि सारी लिखाई चित्रकार की तूलिका से होता है। रबड़ तथा ब्लाटिंग पेपर की भी इनको ज़रूरत नहीं पड़ती।

रामू—यह कैसे चाचाजी ?

मोहन बाबू—तुमको बड़ा आश्चर्य्य हो रहा है और होना भी चाहिए। लेकिन तुम इस भाँति समझ लो कि जिस प्रकार हम लोग अगर 'म' लिखना चाहते हैं तो (म) इस भाँति का एक चिह्न बना देते हैं और पढ़नेवाले इसे 'म' समझ लेते हैं इसी तरह जो अक्षर चीनियों के हैं, उनका अर्थ इससे भी अधिक होता है। चीनियों के एक चिह्न या अक्षर के द्वारा ही एक बहुत बड़ा विचार व्यक्त किया जा सकता है।

रामू—यह तो बड़ी ही विचित्र बात है। इनके यहाँ का पढ़ने-लिखने का ढङ्ग कैसा है ?

मोहन बाबू—इनकी शिक्षण-प्रणाली कई दृष्टियों से कुछ अधिक प्रशंसनीय नहीं है, परन्तु उसकी अपनी एक विशेषता है। गाँव के लड़के यदि कुशाग्रबुद्धि हैं तो उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है। चीनी ज़्यादातर निर्धन हैं, इस कारण अधिक समय तक वे लोग अपनी शिक्षा जारी नहीं रख सकते। लेकिन जो लोग बराबर पढ़ते रहते हैं, वे काफ़ी विद्वान् हो जाते हैं।

चीनी स्कूलों में कक्षाएँ नहीं होतीं

चीन की पाठशालाओं की यह विशेषता है कि उनमें कक्षाएँ नहीं होतीं।

रामू—इसका क्या अर्थ है ?

मोहन बाबू—जिस भाँति हमारे यहाँ के स्कूलों में ७ वीं, ८ वीं तथा ९ वीं कक्षाएँ होती हैं, उस तरह की चीन के स्कूलों में नहीं होतीं। प्रत्येक लड़के की अपनी-अपनी कक्षा होती है, यह भी नहीं कि उसका और भी कोई साथी हो। यह प्रथा अधिकतर ग्रामीण स्कूलों में प्रचलित है।

छोटे और बड़े सभी प्रकार के विद्यार्थी एक ही साथ बैठकर पढ़ते हैं। निस्सन्देह यह दृश्य दर्शनीय होता है। इन सबके काम अलग-अलग होते हैं और पाठ भी दूसरे-दूसरे। लेकिन सब अपना काम करने तथा पाठ याद करने में इस भाँति रत रहते हैं कि

मानों एक दूसरे से बिलकुल अपरिचित हों। इन सारे विद्यार्थियों की अलग आवाज़ों से ऐसा शोर मचता है कि कान नहीं दिये जाते। यदि यहाँ का कोई विद्यार्थी वहाँ पहुँच जाय तो उसे पढ़ना असम्भव हो जाय। परन्तु चीनी विद्यार्थी इस कोलाहल के अभ्यस्त हो गये हैं। इसलिए शोर से उनके कामों में कोई अड़चन नहीं पड़ती।

रामू—और परीक्षा किस भाँति ली जाती है?

मोहन बाबू—परीक्षा के सम्बन्ध में मैं तुम्हें बड़े ही मज़े की बात सुनाऊँगा।

परीक्षा का विचित्र ढंग

परीक्षा एक तो यों ही विद्यार्थियों के लिए कठिन होती हैं, लेकिन चीन में इसकी कठोरता बहुत ही बढ़ा दी जाती है। परीक्षा के सारे नियम बताना तो बड़ा ही कठिन है। मैं कुछ मोटी-मोटी बातें बताये देता हूँ। इनसे तुमको वहाँ की परीक्षा की कठिनता का पूरा पूरा अनुमान हो जावेगा।

पहले तो बहुत बड़ी बड़ी पुस्तकें परीक्षा में नियत होती हैं। अन्तिम परीक्षा के नियम अत्यन्त कठोर हैं। विद्यार्थी एक छोटी सी कोठरी में बन्द कर दिया जाता है। वहाँ से न तो वह किसी से बातें कर सकता है और न कोई दूसरा उसके पास जा ही सकता है। कोठरी छोटी होने के अतिरिक्त गन्दी और अँधेरी होती है, जिससे बहुधा दम घुटने के कारण विद्यार्थी की मृत्यु हो जाती है। मर जाने

पर भी उसकी लाश को कोठरी के द्वार से नहीं निकालते, वरन् एक ओर की दीवार तोड़कर निकालते हैं। जब तक परीक्षा समाप्त नहीं हो जाती, कोठरी का द्वार नहीं खोला जाता। इतने पर भी यह सन्देह रहता है कि कहीं विद्यार्थी ने कुछ चालाकी तो नहीं कर ली। इस पर चाचा-भतीजे दोनों बहुत देर तक हँसते रहे।

रामू—तो क्या कोठरी में घुसते समय विद्यार्थी की जामातलाशी नहीं ली जाती?

मोहन बाबू—तलाशी तो बड़ी सावधानी से ली जाती है परन्तु इतने पर भी सन्देह किया जाता है और बड़ी ही सतर्कता से इस बात का प्रयत्न किया जाता है कि विद्यार्थी कहीं कोई चालाकी न कर सके।

रामू—तलाशी ले लेने के पश्चात् फिर सावधानी की क्या आवश्यकता रह जाती है?

मोहन बाबू—वास्तविकता यह है कि चीनी विद्यार्थी भी इस सम्बन्ध में बड़े ही पक्के धूर्त हैं। वे प्रायः अपनी टोपियों और जूतों के तल्लों में काग़ज़ के टुकड़े ऐसी चालाकी से रखकर ले जाते हैं कि उनको ढूँढ़ना बड़ा ही कठिन होता है। बहुत से विद्यार्थी तो यहाँ तक करते हैं कि बहुत छोटे-छोटे अक्षरों को काग़ज़ पर लिखकर परों की क़लमों में छिपा लेते हैं।

रामू—कितने ही छोटे अक्षर क्यों न हों, पर इन काग़ज़ के टुकड़ों से इन्हें कितनी सहायता मिल सकती है?

मोहन बाबू—मैं तुम्हें अभी बता चुका हूँ कि चीनी विद्यार्थी छोटे-छोटे चिह्नों के द्वारा बड़े से बड़ा विचार व्यक्त कर सकते हैं। ऐसी दशा में कोई आश्चर्य्य नहीं कि वे काग़ज़ के टुकड़े पर बड़ी बड़ी पुस्तकों के इंगितों को लिख ले जायँ। सोचो, परीक्षा में ऐसे घृणित उपायों का उपयोग करना कितना भद्दा है।

रामू—चाचाजी, यह तो बड़ी ही होशियारी की बात है।

मोहन बाबू—छिः, छिः, तुम इसे होशियारी कहते हो ! यह तो खुली हुई बेईमानी है।

रामू—इसमें बेईमानी क्या है ? क्या किसी का रुपया मार लिया जाता है ?

मोहन बाबू—बेईमानी केवल रुपये-पैसों के ही बारे में नहीं होती, वरन् हर बात में इसका ध्यान रक्खा जाता है। जब नियम बना दिये गये हैं कि विद्यार्थी को परीक्षापत्र के प्रश्नों का उत्तर अपनी ही बुद्धि की सहायता से देना चाहिए और किसी दूसरी चीज़ या मनुष्य की सहायता न लेनी चाहिए, तब यदि विद्यार्थी इसके प्रतिकूल कार्य करता है तो वह पक्का बेईमान है और उसका तरीक़ा खुली हुई बेईमानी है।

रामू—ऐसी ग़लतियाँ लोग प्रायः किया करते हैं। अगर विद्यार्थी भी किसी दूसरी चीज़ की सहायता ले लेता है तो इसमें क्या दोष है ?

मोहन बाबू—ये ही विद्यार्थी भविष्य में अपने देश और जाति के नेता तथा कर्णधार बनेंगे। यदि उनमें सत्यता तथा ईमानदारी

न होगी तो सोच लो कि देश और जाति की क्या दशा होगी। इसलिए साधारण मनुष्यों की ग़लतियाँ एक बार क्षमा भी की जा सकती हैं मगर विद्यार्थियों की ग़लतियाँ और फिर इस ढंग की ग़लतियाँ तो किसी भी प्रकार क्षम्य नहीं हो सकतीं।

रामू—चाचाजी! मेरे मास्टर साहब कहते थे कि संसार की सभी भाषाएँ या तो बाईं ओर से दाहिनी ओर को या दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती हैं, मगर चीनी लिपि के लिखने का ढंग बिलकुल अजीब है। चीनी लोग शायद नीचे से ऊपर की ओर लिखते हैं। क्या यह बात सही है?

मोहन बाबू—हाँ, सच है। लेकिन चीनियों के बारे में जो बहुत-सी कथाएँ कही जाती हैं उनमें से बहुतेरी बिलकुल ग़लत तथा झूठ हैं। हाँ, यह ठीक है कि किसी समय में दूसरे देशों की भाँति चीन में भी विचित्र-विचित्र प्रथाएँ प्रचलित थीं। लेकिन अब चीनी लोग अधिक संख्या में सभ्य तथा सुशिक्षित हो गये हैं। उनके कला-कौशल का अनुमान इस बात से भली भाँति किया जा सकता है कि काग़ज़ बनाने का ढंग इन्हें पहली शताब्दी में ज्ञात हो गया था और सातवीं या आठवीं शताब्दी से इनके यहाँ छपाई आरम्भ हो गई थी। इसके सैकड़ों वर्ष बाद इन सबका चलन योरप में हुआ है। अब तो विज्ञान, भूगोल, इतिहास, काव्य तथा साहित्य सभी बातों का ज्ञान इन लोगों को भली भाँति हो गया है। मध्यम श्रेणी के लोगों में भी अब उच्च शिक्षा का प्रचार हो गया है। छोटे-छोटे दरजोंवाली पाठशालाएँ तो अब

गाँव-गाँव में खुल गई हैं। चीन की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली अब नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी है और पच्छिमी शिक्षा के सैकड़ों स्कूल खुल गये हैं। सन् १८९८ ई० में पेकिंग-विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ था। सन् १९१७ ई० में यह विश्वविद्यालय भली भाँति शिक्षा देने लगा। सन् १९०६ ई० में एक मेडिकल स्कूल भी खुल गया और एक बहुत बड़ी संख्या में चीनी विद्यार्थी अमेरिका, योरप आदि देशों में भिन्न-भिन्न विद्याओं की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। एक और नया विश्वविद्यालय हांगकांग में स्थापित हुआ है, जिसमें अँगरेज़ प्रोफ़ेसर शिक्षा देते हैं। इस प्रकार नये ढंग के विद्यालयों की संख्या चीन में बराबर बढ़ती ही जा रही है और उनमें विद्यार्थी भी बहुत बड़ी तादाद में पढ़ रहे हैं।

चीनियों का धर्म

रामू—चीनी लोग तो बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं ?

मोहन बाबू—नहीं तो। चीन देश में इस समय तीन धर्मों का प्रचार है। पहला कनफ़्यूसस, दूसरा टाव तथा तीसरा बौद्ध धर्म है।

रामू—कनफ़्यूसस कौन था ?

मोहन बाबू—कनफ़्यूसस एक बहुत बड़ा दार्शनिक हुआ है। इसका जन्म ईसा से ५५० वर्ष प्रथम हुआ था। इसके उपदेश अधिकतर दार्शनिक तथा विश्व-बन्धुत्व के प्रचारक हैं। इस समय शिक्षित चीनियों का यही धर्म है। बौद्ध धर्म के माननेवालों की संख्या

सबसे अधिक है। इस बौद्धधर्म में भी दूसरे धर्मों की बातें सम्मिलित हैं। इन धर्मों की कितनी ही महत्ता क्यों न हो, लेकिन एक विशेष धर्म जो हर चीनी मानता है वह अपने बड़े-बूढ़ों के प्रति सम्मान प्रकट करना है।

रामू—क्या चीन में मुसलमान नहीं हैं ?

मोहन बाबू—उत्तरी चीन में मुसलमान भी बसते हैं। उनकी संख्या लगभग १ करोड़ है। यह व्यापारी, जो यहाँ आया था, मुसलमान ही था।

रामू—लेकिन देखने में तो वह मुसलमान-सा ज्ञात होता नहीं था।

मोहन बाबू—दाढ़ी-मूँछें तो बेचारे के थीं ही नहीं, मुसलमान-सा कैसे मालूम होता ? भाषा भी उसकी समझ में नहीं आती। हाँ, यदि कलमा और क़ुरान की बातें होतीं तो पता चल जाता।

रामू—क्या चीन में ईसाई बिलकुल नहीं है ?

मोहन बाबू—शायद तुम जानते होगे कि ईसाई भी दो धर्मों के माननेवाले होते हैं। एक रोमन कैथोलिक होते हैं और दूसरे प्रोटेस्टेंट कहलाते हैं। इनमें से फ़्रांसीसी रोमन कैथोलिक मिशन अधिक महत्त्व का है। यह सारे देश में फैला हुआ है। इनके अतिरिक्त सन् १८१७ ई० से प्रोटेस्टेंट मिशन भी बराबर अपना काम कर रहा है। प्रोटेस्टेंट ईसाइयों की संख्या रोमन कैथोलिकों की संख्या से अधिक है। यहूदी लोग भी चीन में बसते हैं।

रामू—चीन में सन् कौन-सा चलता है ?

मोहन बाबू—सन् १९१२ ई० से अँगरेज़ी सन् ही चलता है।

चीन के बाग़ तथा फूल

रामू की कोठी का बेला सारे नगर में प्रसिद्ध था। कोठी की चहारदीवारी से मिली हुई बेले की लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ दूर तक चली गई थीं। संध्या होते ही फूल खिलने लगते और उनकी सुगन्धि से दूर-दूर तक की वायु सुवासित हो जाती थी। रामू अपने चाचाजी के साथ आँगन में बैठा हुआ था। फूलों की भीनी-भीनी सुगंध आ रही थी। चीन देश की चर्चा होते-होते वहाँ के फूलों और बाग़ों की चर्चा छिड़ गई।

रामू—क्या हमारे यहाँ की भाँति चीन देश में भी फूल और बाग़ होते हैं?

मोहन बाबू—चीनी लोग फूलों के बड़े ही प्रेमी होते हैं। वे अपने घरों को प्रायः फूलों से ही सजाया करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि चीनी लोग उद्यानशास्त्र के पूरे ज्ञाता हैं। वे खाद के बारे में इतना अधिक ज्ञान रखते हैं कि शायद ही कोई देश यह विषय उनकी अपेक्षा अधिक जानता हो। लेकिन उनमें बुराई यह है कि वे अपनी इस विद्या का प्रयोग बहुत ही गन्दी-गन्दी जगहों पर करते हैं। वे बढ़िया से बढ़िया फूल बड़ी मेहनत से लगाते हैं, मगर यह कभी नहीं सोचते कि जिस स्थान पर फूल लगाये जा रहे हैं वह अत्यन्त गन्दा तथा अपवित्र है। जब दूसरे देशवाले इस दृश्य को देखते हैं तब उन्हें बड़ा ही आश्चर्य होता है कि जो मनुष्य गन्दे से गन्दे स्थान को हँसते-खेलते बाग़ के रूप में परि-

वर्तित कर सकता है वह आसपास की गन्दगी कैसे सहन कर सकता है? लेकिन चीनी इस सम्बन्ध में बिलकुल उदासीन है।

चीनी लोग बड़ी ही चतुरता से छोटी-छोटी वाटिकाएँ तैयार कर लेते हैं। फिर उनमें बड़े ही परिश्रम से नहरें ले जाते हैं। वे गुड़िया के घरों की भाँति फ़व्वारा बनाते हैं और बहुत ही छोटी-छोटी जगहों में नन्हे-नन्हे फूलों के पौदे तथा झाड़ियाँ लगा देते हैं जो देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती हैं। वे बड़े ही प्रेम से अपने समय का अधिकांश भाग इसी भाँति के कार्यों में व्यय करते हैं और इसमें बच्चों की भाँति एक प्रकार का आनन्द पाते हैं। लेकिन वे लोग इस ओर ज़रा भी ध्यान नहीं रखते कि इन्हीं नहरों, फ़व्वारों, वाटिकाओं तथा सुन्दर फूलों के पास ही गन्दगी और अपवित्रता न रहने पावे, यह आश्चर्य्य की बात है। आसपास की गन्दगी से केवल इनका सौंदर्य ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् देखनेवाले का मन भी ख़राब हो जाता है।

रामू—चाचाजी, मेरा मतलब यह था कि क्या जापान की भाँति चीन देश में भी बाग़ों तथा फूलों को लोग अधिक पसन्द करते हैं? मैंने 'जापान का हाल' नामक पुस्तक में पढ़ा है कि जापान में वसन्त ऋतु बड़ी ही मनोहर होती है। और इन दिनों में लोग दूर-दूर के गाँवों में जाकर फूलों की शोभा का नैसर्गिक आनन्द लूटते हैं। जापान में इस ऋतु में बड़ी ही चहल-पहल रहती है।

मोहन बाबू—चीन के अधिकांश भाग में फूलों के पौदे तथा झाड़ियों के बाग़ लगे हुए हैं और चमेली तथा नरगिस आदि के फूलों

से नगर के नगर भरे पड़े हैं। मगर जापान की भाँति यहाँ वसन्त ऋतु का आनन्द नहीं दिखाई देता। जापान के लोग तो इस अवसर पर अपने व्यापार को प्राय: छोड़कर प्रकृति की छटा का अवलोकन करने के लिए इधर-उधर निकल जाते हैं।

रामू—क्यों चाचाजी, चीन में ऐसा क्यों नहीं होता? चीन और जापान के लोग हैं तो एक ही जाति के?

मोहन बाबू—इसमें सन्देह नहीं कि चीनी और जापानी दोनों ही फूलों के बड़े ही प्रेमी हैं और दोनों ही उनकी सजावट करने में निपुण हैं। लेकिन फिर भी दोनों में एक विशेष अन्तर है। फूलों से दोनों को प्रेम है, मगर दोनों की भावना में अन्तर है। केवल फूलों में ही नहीं, वरन् जीवन के प्रत्येक कार्यों में यह अन्तर प्रत्यक्ष दिखाई देता है। कुछ भी कारण हो, लेकिन उसकी व्याख्या करना कठिन अवश्य है।

रामू—चाचाजी, उस चीनी व्यापारी को देखकर मुझे कुछ ऐसा ज्ञात होता था कि जापानी लोग इनसे अधिक साफ़-सुथरे रहना पसन्द करते हैं।

मोहन बाबू—ख़ैर, इस चीनी व्यापारी को देखकर चीन के निवासियों के सम्बन्ध में मन में किसी प्रकार की धारणा बनाना उचित नहीं है; क्योंकि यह बेचारा तो निर्धन है। लेकिन यह तो बिलकुल ठीक है कि जापानी लोग चीनियों की अपेक्षा अधिक सभ्य होते हैं। इसलिए यह भी सम्भव है कि वे लोग इनसे अधिक स्वच्छता के प्रेमी हों।

रामू—लेकिन यह तो तय है न कि चीनी लोग उद्यानशास्त्र में बड़े ही निपुण होते हैं ?

मोहन बाबू—हाँ, यह बिलकुल ठीक है कि चीनी लोग उद्यान-शास्त्र के पण्डित होते हैं और इस विद्या में संसार की कोई भी जाति इनकी बराबरी नहीं कर सकती। इसका मुख्य कारण यह है कि उद्यानशास्त्र का कुछ सम्बन्ध इनके धर्म से है। तरह-तरह की शक्लों की झाड़ियाँ तथा फूल के पौदे कुछ विशेष अर्थ रखते हैं।

रामू—भिन्न-भिन्न प्रकार की सूरतों की झाड़ियाँ कैसी ?

मोहन बाबू—उदाहरण के लिए गाय, सूअर के बच्चे तथा घरों की शक्ल की झाड़ियाँ, जो ये लोग लगाते हैं।

रामू—ये लोग झाड़ियाँ किस भाँति बनाते हैं ?

मोहन बाबू—चीनियों की उद्यान-सम्बन्धी निपुणता की यही तो विशेषता है। वे झाड़ियों की सूरतें जानवरों की-सी बना देते हैं। शायद अब भी तुम इस बात को भली भाँति न समझ पाये होगे। देखो, इसे इस भाँति समझो कि कुछ पार्कों में जिस भाँति अक्षरों के थाल्हे बनाकर उनमें घासें लगा देते हैं, उसी भाँति ये लोग झाड़ियों को जानवरों की सूरतों में लगाते हैं।

रामू—लेकिन ये लोग ऐसा क्यों करते हैं ? क्या इसमें कोई भेद है ?

मोहन बाबू—उद्यानशास्त्र की दृष्टि से तो अवश्य ये चीज़ें प्रशंसनीय हैं, लेकिन यहाँ शायद इसका कारण अन्धविश्वास ही है। जिस विचार से द्वार पर भयानक तथा डरावने चित्र लगाये जाते हैं उसी विचार से गाय तथा सुअर की सूरतों की झाड़ियाँ बनाई जाती

हैं। मैं तो तुम्हें बता चुका हूँ कि चीन-निवासी अपने-अपने द्वारों पर भयानक-भयानक चित्र लगाते हैं, जिसके लिए उनका विचार है कि अब उनके घर में प्रेत-आत्माएँ नहीं घुस सकतीं और इस भाँति उनके घरवाले इन भूतों-प्रेतों से सुरक्षित हैं।

गुल्लाला या पोस्ते का फूल

फूलों तथा बागों के अतिरिक्त गुल्लाला की छटा चीन में देखने योग्य होती है। गुल्लाला के विषय में तो तुमने अवश्य पढ़ा होगा, मगर शायद समझ न सके होगे। गुल्लाला पोस्ते के फूल को कहते हैं।

चीन की अन्य पैदावार

मोहन बाबू—जानवरों में कोई विशेष प्रकार का जानवर नहीं होता। दक्षिण और दक्षिण पूर्व में गैंडा, चीता और हाथी पाये जाते हैं। रीछ हर भाग में पाया जाता है। ऊँट, हाथी और भैंसों की गणना पालतू जानवरों में की जाती है। घोड़े साधारण ही होते हैं।

रामू—चीन की सबसे सुन्दर चिड़िया कौन है?

मोहन बाबू—यों तो चीन में भिन्न-भिन्न प्रकार की चिड़ियाँ पाई जाती हैं, लेकिन चकोर वहाँ का सबसे सुन्दर पक्षी है।

रामू—चकोर क्या वही चिड़िया है जिसको कहा जाता है कि यह आग खाता है?

मोहन बाबू—हाँ, वही चकोर। यह चीन के पक्षियों में सबसे अधिक सुन्दर होता है।

रेशम का कपड़ा

रामू—चाचाजी, चीन में रेशम तो बहुत अधिक पैदा होता होगा ?

मोहन०—हाँ, चीन का रेशम बहुत प्रसिद्ध है, लेकिन शायद तुम जानते नहीं हो कि यह किस भाँति पैदा होता है।

रामू—सुनते हैं कि रेशम कीड़ों से पैदा होता है।

मोहन०—हाँ यह ठीक है, लेकिन ये कीड़े किस भाँति रेशम बनाते हैं, यह तुम देखो तो तुम्हें बड़ा ही आश्चर्य हो।

रामू—लेकिन यह कीड़ा खाता क्या है ?

मोहन०—यह शहतूत की पत्तियाँ खाता है और एक समय ऐसा आता है जब यह खाना खाना बन्द कर देता है। इसी समय इस पर रेशम का ख़ोल तैयार हो जाता है।

रामू—हाँ हाँ; मैंने भी यही सुना है।

मोहन०—चीन में शहतूत के वृक्ष अधिक हैं। इनकी पत्तियाँ रेशम के कीड़ों के खाने के काम में आती हैं। चीनियों ने रेशम के व्यापार में काफ़ी उन्नति की है। इस काम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके तैयार करने में किसी भी मशीन से काम नहीं लिया जाता है। रेशमी कपड़ों में कुछ कपड़े ऐसे भी हैं जो चीन के अतिरिक्त और देशों में नहीं बनते।

रामू—चाचाजी, फिर तो चीन देश का हर एक आदमी रेशमी ही कपड़े पहनता होगा।

मोहन०—यह तो तुमने ख़ूब कही। क्या तुम नहीं देखते कि यहाँ रेशम कई भाँति का होता है ? कुछ क़ीमती होता है और कुछ

४

कम दामों का होता है। कम दामोंवाले कपड़े ग़रीब और क़ीमती अमीर लोग पहनते हैं। यही दशा वहाँ की भी है। यहाँ रेशमी कपड़ों पर और काम भी बनाया जाता है और इसलिए इसका मूल्य भी बढ़ जाता है। यही कपड़ा दूसरे देशों में नहीं बनता।

चीनियों की जातीय विशेषताएँ

रामू के पिता का अधिक समय गाँव के प्रबन्ध में ही ख़र्च होता है। वे १५ दिन तक गाँव में रहने के पश्चात् आज घर आये हैं। बकरियाँ, हिरन के बच्चे तथा और दूसरी चीज़ें, जो वहाँ सस्ती मिलती हैं, अपने साथ लाये हैं। रामू इन्हीं चीज़ों की देख-भाल में काफ़ी समय तक रहा। एकाएक उसे ध्यान आया कि चाचाजी कमरे में बैठे हुए मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। वह फ़ौरन उठा और कमरे में आ गया। देखा, चाचाजी आरामकुर्सी पर लेटे हुए एक पुस्तक पढ़ रहे हैं।

रामू—चाचाजी, क्षमा कीजिए, हिरन के बच्चे और बकरियों में मेरा मन इतना अधिक रम गया कि मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि आप मेरी प्रतीक्षा में बैठे होंगे। यह तो बताइए कि क्या सब चीनी लोग समान हैं।

मोहन०—मैं तुम्हें उनके धर्मों के विषय में बता चुका हूँ। यह समझना कि सब चीनी एक ही जाति के हैं, बड़ी भारी भूल है। वास्तविक चीनी मध्यचीन के निवासी हैं। वे देश के अन्य चीनियों से बिलकुल भिन्न हैं। साधारणतः चीनी लोगों में शारीरिक शक्ति

कम होती है। लेकिन उनमें धैर्य तथा सहनशीलता अधिक होती है। ये गुण परिश्रमशील होने के लिए बड़े ही आवश्यक समझे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि चीनियों में साहस की भी कमी होती है। इन लोगों को अपने घरवालों से बड़ा प्रेम होता है और अपने कुटुम्ब को सुखी रखने के लिए ये कठोर से कठोर परिश्रम करते हैं। उन भागों में, जहाँ दूसरे देशवालों से मिलने-जुलने का अवसर कम मिलता है, ये लोग बड़े ही सरल तथा सीधे दिखाई पड़ते हैं। लेकिन आम तौर पर झूठ और धूर्त्तता इन लोगों में कूट-कूटकर भरी हुई है।

रामू—चाचाजी, मैंने तो सुना है कि ये लोग बड़े ही सभ्य होते हैं ?

मोहन०—हाँ, बातचीत करने में ये लोग बड़े सभ्य तथा सुशील होते हैं। लेकिन स्वतन्त्रता तथा मित्रता की इनमें बहुत कमी होती है। ये लोग बातचीत करने में बड़ी नम्रता तथा सभ्यता का परिचय देते हैं। इसके दो एक उदाहरण तुम्हें सुनाता हूँ। देखो ये कैसे हास्यास्पद हैं ?

प्रश्न—श्रीमान् की अवस्था क्या होगी ?

उत्तर—मैं मूर्खता-पूर्ण ढङ्ग से इतने दिनों से घटता हुआ चला आ रहा हूँ।*

प्रश्न—आपका सम्मानित व्यवसाय क्या है ?

---

* हिन्दी भाषा में ऐसी बनावटी बातों का वर्णन कठिन है।

उत्तर—मेरा तुच्छ व्यवसाय यह है।

मोहन बाबू (हँसकर)—क्यों रामू, इसी तरह की बातचीत शायद लखनऊवाले भी करते हैं ?

रामू—चाचाजी, यह तो बनावट है, इसे सभ्यता क्यों कहते हैं ?

मोहन०—इसी को सभ्य बातचीत कहते हैं।

रामू—मुझे तो इस तरह की बातचीत से घृणा है। आख़िर बनावट की भी तो कोई हद होती है ?

मोहन०—तुम्हारा यह विचार बिलकुल ठीक है। असत्य और व्यर्थ की बातों का नाम सुशीलता या सभ्यता नहीं होना चाहिए। चीनियों में इस बनावट के अलावा जुए का भी बहुत चलन है। वहाँ शराब बहुत ही कम पिई जाती है, मगर अफ़ीम बहुत खाई जाता है। अब क़ानून के द्वारा इसका निषेध कर दिया गया है। इतना होने पर भी चीनियों में अभी जाग्रति के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते।

रामू—वह क्यों ?

मोहन०—चीनियों की सबसे बड़ी विशेषता उनका मितव्ययी स्वभाव है। वे बड़े ही परिश्रमी होते हैं। परिश्रम करना उनके लिए स्वाभाविक-सा है। माता-पिता के प्रति प्रेम तथा सम्मान हर चीनी के हृदय में है। यही इनकी जातीय विशेषता है। यही वे गुण हैं जिनके कारण बहुत सी त्रुटियाँ होते हुए भी वे प्रसन्न हैं।

रामू—क्या माता-पिता के प्रति सभी चीनियों को प्रेम होता है ?

मोहन०—चीनियों में यह गुण बहुत बढ़ा-चढ़ा है। इनके मकानों में एक कमरा केवल इसी लिए होता है कि उसमें बैठकर उनकी पूजा की जा सके।

रामू—तो क्या चाचाजी, यह कोई अच्छी बात है?

मोहन०—अच्छी-बुरी का प्रश्न नहीं, यह उनकी एक जातीय विशेषता है जो समस्त चीन में प्रचलित है।

रामू—जब छोटे चाचाजी विलायत से आ जायँगे तो उनसे भी वहाँ के हालात पूछूँगा। देखें, वे क्या बताते हैं?

मोहन०—पहले तुम उनसे बैरिस्टरी के गाउन के बारे में पूछना कि यह सुन्दर तथा आकर्षक गाउन, जो आपके व्यक्तित्व की महत्ता बढ़ानेवाला है, किस मूल्य का है। और जब बैरिस्टरी आरम्भ कर दें तब यह पूछना कि श्रीमान् का आदरणीय व्यक्तित्व प्रतिवर्ष कितनी आय कर लेता है।

रामू—चाचाजी, मुझे ऐसे ढंग से प्रश्न करने में बड़ी शर्म सी आती है—क्या भद्दा तरीक़ा है!

मोहन०—यह तो है ही।